

|| श्री महाकाली प्रसन्न ||

सागरातुनी जगदंबा आली | एका भक्तजने दृष्टी देखिली |
आडिवरे ग्रामी स्थापना केली | अखिल भारतवर्षी विख्यात
झाली | जय देवी जय देवी जय महाकाली | आरती ओवाळू
भावे त्रिकाळी || १ ||

आपुलिया शयनी निजवुनि पतिला | ब्रह्मांडाचा तुवां व्यापार
केला | जागा होण्यापूर्वी अदृश्य केला | ऐसा व्यासमुखी
इतिहास कथिला || जय देवी ... || २ ||

आदी शक्ती ऐसे प्राज्ञा बोलती | ध्यान पाहूनिया आनंदित
होती | दक्षिणमुखी उग्र देवता | आर्यावर्ती दुजी नाही पहाता
|| जय देवी ... || ३ ||

बारा वाड्याची तू ग्रामदेवता | मातेसारिखी हो करिशी ममता
| भक्तांलार्गी नसे अन्य रक्षिता | धांवसि देशांतरी ध्यान
करितां || जय देवी ... || ४ ||

शुक्रवारी तुझी वारी जे करिती | खोत महाजन कुलकर्णी येती
| धूपदीपेसी करुनी आरती | शर्करा प्रसाद सर्वासी देती ||

जय देवी || ५ || शिवकळेने तुझा वाढे अवसर |
व्याधिग्रस्त येती परिवार | पिशाचयोनी निरसी साचार | ऐसा
अंबे तुझा महिमा हा थोर || जय देवी ... || ६ ||

चौदा खोतांसी संकट जे पडले | आई जगदंबे हो तूं
निवारीलें | काळासी दारुण युद्ध जें केलें | मज आपुलें हे
धन रक्षिले || जय देवी ... || ७ ||

आसनी भोजनीं नित्य गे शयनीं | सगुण रूप तुज्जें नित्य
असे मनी | योगी ध्यान करिती तुज्जें गे जणांनी | तूंचि
सृष्टी केली असे वाटे मनी || जय देवी ... || ८ ||
अंबे सर्वही दिशा अवलोकन करिसी | भक्तमंडळींच्या हृदयी
रहासी | मृत्युलोकीं तूं नवस पावशी | पुतळ्यांचे नवस
घेऊनी येसी || जयदेवी ... || ९ ||

अंबे वामभार्गी महालक्ष्मी देवी | सन्मुख सरस्वती उभी आहे
देवी | दक्षिणेस आहे रवळनाथ देव | पाश्चाद्भार्गी असे
नगरेश्वर शीव || जय देवी ... || १० ||

अंबेचे द्वारी उभे द्वारपाळ || चतुर्भुज, दोघे बाळ गोपाळ |
आंत पहाता चित्रें अपार | पुढें दिसे तुज्जें स्वरूप सुंदर ||
जय देवी ... || १३ ||